OM 20 A FINAL-MAHARASHTRA_Page 1 and 2 14/01/2015 08:02 Page 6

शिव का अवतरणोत्सव – 'शिवरात्रि'

आत्माओं का जन्म होता है और परमात्मा का अवतरण। आत्मा और परमात्मा में यही प्रमुख अंतर है। कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्माएं जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं। लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता। वह पुनर्जन्म के चक्र से परे है। कर्मातीत होने के कारण परमात्मा किसी के गर्भ में नहीं आता। कोई माँ उस सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगत्-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। परमात्मा शिव स्वयंभू हैं। सर्व-आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाया प्रवेश करते हैं। वे योग-बल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उसके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय: लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सत्-धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं। भारतवर्ष में योगियों के परकाया प्रवेश की बात तो सर्व-विदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी ईश्वर हैं।

परमात्मा का अवतरण ज्ञान-योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। यदि वे गर्भ से जन्म लें तो

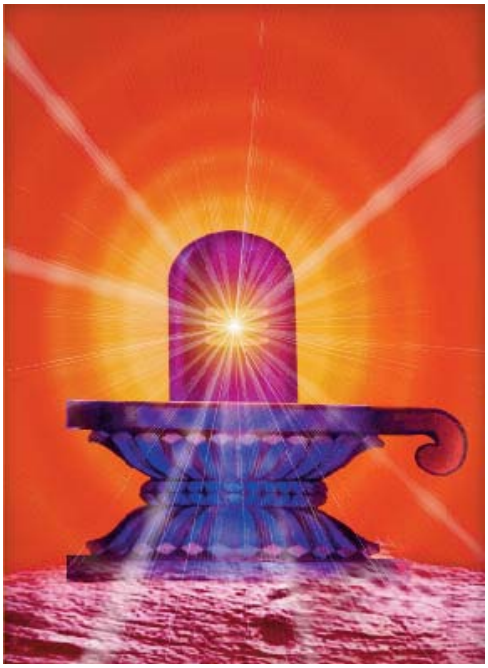

गर्भ का समय और बाल्यावस्था का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बुज़ुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव-सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष शरीर को परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाना पड़ेगा। अत: परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य-प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरंत ही ज्ञान-योग की शिक्षा देने लगते हैं। बीसवीं शताब्दी में इसी तरह का एक असफल प्रयोग किया गया था। अपने महापरिनिर्वाण से पूर्व बुद्ध ने कहा था कि 2500 वर्ष से पूर्व ही मैं मैत्रेय नाम से दोबारा जन्म लूँगा क्योंकि उस समय पुन: धर्म-ग्लानि हो जायेगी। थियोसॉफी के कर्णधार एनीबेसेन्ट आदि को अनुभव हुआ कि बुद्ध की आत्मा जन्म लेने को उत्सुक है लेकिन वैसी शक्तिशाली आत्मा के लिए उपयुक्त गर्भ नहीं मिल रहा है। उन्हें लगा कि उपयुक्त गर्भ के अभाव में ऐसा स्वर्ण-अवसर सदा के लिए खो जायेगा। अत: उन्होंने दूसरा विकल्प चुना। उन्होंने विचार किया कि एक मनुष्य को इतना तैयार किया जाए कि वह अपनी आशा, आकांक्षा और अहं को विसर्जित कर मैत्रेय के अवतरण के लिए उपयुक्त वाहन बन जाये। उन्होंने इस कार्य के लिए कई प्रतिभा-सम्पन्न लड़कों को चुना जिसमें कृष्णमूर्ति और उनके भाई भी थे। प्रयोग के मध्य ही कृष्णमूर्ति के भाई की मृत्यु हो गई तो उन्होंने सारा ध्यान कृष्णमूर्ति पर लगाया। एनी बेसेन्ट उन्हें इंग्लैण्ड ले गई और उस समय के सर्व श्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा उन्हें शिक्षा दी गई। कृष्णमूर्ति को सर्वोत्तम शिक्षा दी गई और उन्होंने मैत्रेय का वाहन बनना स्वीकार कर लिया। विधिवत घोषणा कर दी गई कि अमुक तिथि को अमुक समय कृष्णमूर्ति अपने अहमत्व को पूर्ण रूपेण त्याग देंगे और मैत्रेय की आत्मा उनमें प्रवेश कर जायेगी। फिर उनके माध्यम से मैत्रेय की आत्मा ही अपना सारा कार्य करेगी। विश्व-इतिहास के इस अभूतपूर्व दृश्य को देखने के लिए विश्व-भर के थियोसॉफिस्ट एकत्रित हुए। लेकिन ठीक समय पर कृष्णमूर्ति ने विद्रोह कर दिया और मैत्रेय का वाहन बनना अस्वीकार कर दिया। इस दुर्घटना से थियोसॉफी आंदोलन को इतना गहरा धक्का लगा कि फिर वह सम्भल न सका।

हाँ, परमात्मा को हमने अनुभव किया...

परमात्मा ने मुझे गोदी में बिठाया

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयान करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद में होता है। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं।- **महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति,** अध्यक्ष षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार

इस ज्ञान से ही सुंदर भविष्य संभव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूं, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है? मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा। -**शास्त्री जीवनदास,** मैनेजिंग ट्रस्टी श्री स्वामी नारायण गुरुकुल।

आबू में साक्षात् भगवान से मिलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में शान्ति व सद्भाव का संदेश दिया जाता है। माउण्ट आबू में आने पर मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। हम साक्षात् भगवान से मिले, उन्होंने हमसे बात की। पैसों से मखमल के गद्दे तो खरीदे जा सकते हैं, बढ़िया बिस्तर भी लिए जा सकते हैं परन्तु गहरी नींद अध्यात्म से ही प्राप्त हो सकती है। इस संस्था के सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होने के कारण आध्यात्मिकता चारो ओर फैल रही है जो कि समाज के लिए ऑक्सीज़न का काम कर रही है। - **महामण्डलेश्वर श्री जनार्दन महाराज** सतपंत, फैजपुर।

इस मिलन से भावातीत हुआ

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। -**रसिक पीठाधीश महंत जन्मजेयशरण,** अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या

यह ईश्वर ही बोल सकता है

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव इस विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है। चाहे वह मुरलियों के माध्यम से हो, चाहे दादियों-दीदियों के माध्यम से हो, यहाँ जो वाणियाँ सुनने को मिलती हैं वे साक्षात् ईश्वर की ही लगती हैं। जो जीने का ढंग इस संस्था में बताया जाता है वह सब सम्प्रदायों से उठकर है और समाज के उत्थान के लिए है। अल्पकत बाबा से मिलने पर भी मेरा अनोखा अनुभव रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि दादी नहीं, वहाँ ब्रह्मा बाबा ही बैठे हैं। -**जसवीर सिंह,** राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष।

इस एहसास को भूल नहीं सकता

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। -**डॉ.एस.पी.लोचड,** सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली

'मैं' ब्रह्मा के मस्तक से प्रकट हुआ...

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा – ''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊँगा।'' आगे लिखा है कि ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रुद्र' हुआ।'' शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का यह भी भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

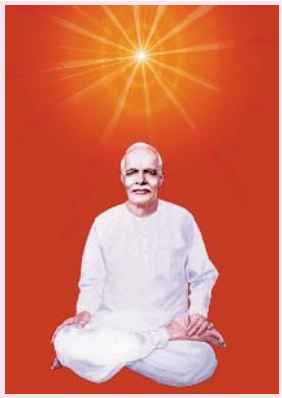

ये मेरे पल यादगार बन गए

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। -**डॉ.स्वामी केशवानंद सरस्वती,** काशी

भगवान ही प्यार कर सकता है

दुनिया के सम्बन्धों में जो भासना आती है उसमें मुझे हमेशा मोह की फीलिंग आती थी, उसमें रोना भी आ जाता था। मैं सोचता था कि कोई मुझे ऐसा मिले जो मुझे भरपूर सुख दे और उसके बदले में मुझसे किसी चीज़ की उम्मीद ना करे। उसी की भरपाई परमात्मा ने की और ऐसी की कि मै भरपूर हो गया। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय वस्तुत: एक देवत्व को गढ़ने वाला विश्व विद्यालय है। मुझे जो यहाँ आकर परमात्मा से मिलकर जो इन्द्रियातीत अनुभव हुए, मैं चाहता हूं कि सम्पूर्ण जनमानस इसका सुख ले। मुझे अब लगता है कि परमात्मा मेरा हो चुका है और मैं बहुत सुखी हो गया। यह आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक ऐसा पाथेय है जिससे मनुष्य का नैतिक जीवन तो सुधरता ही है और साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी निर्मल होता जाता है। - **पी.के सिंह,** डिप्युटी डायरेक्टर जनरल दूरदर्शन, दिल्ली।